वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 419
ISBN-978-93-84003-07-4

श्री वासुपूज्य विधान

–रचयित्री –

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी,
दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

जैनधर्म के 12वें तीर्थंकर भगवान वासुपूज्य की पंचकल्याणक से पवित्र भूमि पर जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी चारित्रचन्द्रिका परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के पावन प्रेरणा से निर्मित 31 फुट उत्तुंग भगवान वासुपूज्य की पंचकल्याणकप्रतिष्ठा फाल्गुन कृ. 13 से फाल्गुन शु. 3 (27 फरवरी से 3 मार्च 2014) तक के शुभावसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.
फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org, E-mail : jambudweeptirth@gmail.com
Facebook : jaintirthjambudweep

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2540	मूल्य
1100 प्रतियाँ	फाल्गुन शु. तृतीया, 3 मार्च 2014	20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

-पीठाधीश स्वस्ति श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

ऊँ नमो मंगलं कुर्यात् , ह्रीं नमश्चापि मंगलम्।
मोक्षबीजं महामंत्रं, अर्हं नमः सुमंगलम् ।।

परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने बीसवीं–इक्कीसवीं शताब्दी में साहित्य सृजन की अविरल धारा को प्रवाहित करके जैनधर्म की अद्भुत प्रभावना की है तथा जैन साहित्य जगत पर भी अनंत उपकार किए हैं।

जिनेन्द्र भगवान की स्तुति, भक्ति कर्मनिर्जरा में विशेष कारण है। भक्त भगवान की भक्ति करते–करते एक दिन स्वयं भगवान बन जाता है। पूज्य माताजी हमेशा अपने प्रवचनों में कहती हैं कि प्रत्येक प्राणी की आत्मा भगवान आत्मा है, जैसे दूध में घी शक्तिरूप में विद्यमान है, वैसे ही प्रत्येक आत्मा में परमात्मा बनने की शक्ति विद्यमान है।

आचार्यों ने श्रावक के जो षट्कर्तव्य बतलाएं हैं, उन्हें प्रतिदिन करते रहना चाहिए–

देवपूजा गुरुपास्तिः स्वाध्यायः संयमस्तपः।
दानं चेति गृहस्थाणां, षट्कर्माणि दिने-दिने।।

अर्थात् भगवान की पूजा-आराधना, गुरु की उपासना, स्वाध्याय, संयम, तप और दान यथाशक्ति गृहस्थों को करना चाहिए।

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के प्रथम पट्टशिष्य चारित्र चूड़ामणि आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से आर्यिका दीक्षा को प्राप्त करने वाली, वर्तमान में सभी पीछीधारी साधुओं में सबसे प्राचीन गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी हैं। इनकी लेखनी से लिखा गया एक–एक शब्द मोती की माला के समान है।

यह 'श्री वासुपूज्य विधान' सभी के जीवन में सुख, शांति, समृद्धि को प्रदान करें, यही मंगल भावना है। पूज्य माताजी स्वस्थ रहें, दीर्घायु को प्राप्त करें। वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला जहाँ से लाखों की संख्या में ग्रंथों का प्रकाशन हो चुका है, आगे भी दिन–दूनी रात चौगुनी वृद्धि करे, यही जिनेन्द्रदेव से मंगल कामना है।

प्रस्तावना

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

पूजा विधानों की श्रृंखला में यह श्री वासुपूज्य मण्डल विधान पूज्य गणिनी प्रमुख आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी ने रचकर नूतन कृति प्रदान किया है जिस प्रकार से शान्तिविधान को लोग एक दिन में सम्पन्न करके भगवान शान्तिनाथ की आराधना कर लेते हैं, जिससे अनेक अघटित घटनाओं के संकट से उनकी रक्षा हो जाती है, उसी प्रकार 12 वें तीर्थंकर, प्रथम बालयति भगवान वासुपूज्य भगवान की भक्ति में यह विधान भी आप सभी एक दिन में ही सम्पन्न कर सकते हैं और फिर स्वयं अनुभव आएगा कि किस प्रकार से आपके मनोरथ सिद्ध होते हैं।

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने 24 तीर्थंकरों के पृथक्–पृथक् विधानों की रचना की है, जिनमें कुछ विधान प्रकाशित हैं और अभी कुछ अप्रकाशित हैं। 24 तीर्थंकरों की 16 जन्मभूमियाँ हैं। जिनमें से 12 वें तीर्थंकर वासुपूज्य भगवान की जन्मभूमि चंम्पापुरी तीर्थक्षेत्र है। यहाँ पर भगवान वासुपूज्य के पाँचों ही कल्याणक हुए हैं। ऐसी पावन भूमि पर पूज्य माताजी की पावन प्रेरणा से 31 फुट उत्तुंग भगवान वासुपूज्य की प्रतिमा विराजमान हो चुकी है। जिसका पंचकल्याणक फाल्गुन कृ. त्रयोदशी, 27 फरवरी 2014 से प्रारम्भ हो रहा है।

इस विधान में पूज्य माताजी ने सर्वप्रथम मंगलाचरण से शुभारम्भ किया है। उसके बाद अर्हंत पूजा दी है। अर्हंत पूजा के बाद तीर्थंकर श्री वासुपूज्य भगवान की पूजा, उनके पंचकल्याणक के अर्घ्य एवं 108 गुणों के 108 अर्घ्य हैं, 1 पूर्णार्घ्य है और फिर जयमाला हैं। विधान के अंत में पूज्य माताजी ने विधान की महिमा बताते हुए लिखा है–

श्री वासुपूज्य विधान जो जन, भक्ति श्रद्धा से करें।
सब रोग शोक निमूल कर, दारिद्र संकट परिहरे।।
अद्भुत अलौकिक नर सुरों के, अभ्युदय को पाय के।
'सज्ज्ञानमति' रवि किरण से, भविजन कमल विकसायेंगे।।

जयमाला के बाद में प्रशस्ति हैं जिसमें पूज्य माताजी ने गुरुवावली दी है। प्रशस्ति के बाद मेरे द्वारा रचित चम्पापुरी तीर्थ की पूजा है। इसके बाद भगवान श्री वासुपूज्य एवं चम्पापुरी तीर्थ की आरती है।

इस प्रकार इस विधान में कुल 3 पूजा, 108 अर्घ्य, 1 पूर्णार्घ्य एवं 3 जयमाला हैं। यह विधान करने, कराने वाले सभी भव्यजीव रोग, शोक, दुख, दारिद्र को दूर कर सुख, शान्ति, समृद्धि को प्राप्त करें यही मंगल भावना है।

दो शब्द

-आर्यिका सुव्रतमती

वासवैः पूजित इति वासुपूज्यः। चम्पापुर्यां धनदकृता रत्नानां।।
आसीद्-दृष्टिः खलु जनतापुष्ट्यै सा। यस्यैव संभवति स मां संपुष्यात्।।1।।

भगवान महावीर के शासनकाल में बीसवी-इक्कीसवीं शताब्दी में जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी युगप्रवर्तिका, चारित्रचन्द्रिका, आर्यिकाशिरोमणि, परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने जिनधर्म, जिनागम की विशेष प्रभावना करते हुए अब तक 300 ग्रंथों से अधिक ग्रंथों का लेखन शुद्ध, प्रासुक लेखनी से आगमानुसार किया है, जिनमें से अभी कई ग्रंथ अप्रकाशित हैं।

आज के भौतिक युग में लोगों को धर्ममार्ग में लगाने के लिए भगवान कीभक्ति, पूजा विधान आदि सशक्त माध्यम है। जब लोग पूज्य माताजी द्वारा रचित विधानों की पूजाओं को पढ़ते हैं तो वे भक्ति में भावविभोर हो जाते हैं, उनके पैर थिरकने लग जाते हैं, वे भक्तिभाव से पूजा करके असंख्य कर्मों की निर्जरा कर लेते हैं।

पूजा विधाओं की शृंखला में यह श्री वासुपूज्य विधान आप सभी के हाथों में आ रहा है। पंचकल्याणक से सहित तीर्थंकर श्री वासुपूज्य का यह विधान चमत्कारिक विधान है। इसे एक दिन में सम्पन्न करके आप सभी मनवांछित फल की प्राप्ति कर सकते हैं।

पूज्य माताजी की वाणी जिनवाणी हैं। लेखनी में सरस्वती का वास है। माताजी क्वांरी कन्याओं की पथप्रदर्शिका हैं। वर्तमान में दीक्षित सभी साधुओं में सबसे प्राचीन दीक्षित हैं। जिनागम का सार बतलाने वाली, ज्ञानामृत का वितरण करने वाली, षट्खण्डागम की 16 पुस्तकों पर सिद्धान्तचिन्तामणि नाम की संस्कृत टीका लिखने वाली, अष्टसहस्री का हिन्दी अनुवाद करने वाली, राष्ट्रगौरव, युगनायिका, सिद्धान्तचक्रेश्वरी, वाग्देवी आदि अनेकों उपाधियों से अलंकृत पूज्य माताजी इस युग के लिए एक वरदान हैं।

विधान की प्रूफ रीडिंग के माध्यम से मुझे जो स्वाध्याय का लाभ प्राप्त हुआ है, वह मेरे भव भ्रमण को दूर कर शीघ्र ही श्रुतज्ञान, केवलज्ञान की प्राप्ति करावे, इन्हीं मंगल भावनाओं के साथ पूज्य माताजी के चरणों में कोटि-कोटि नमन।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति–अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**–गोयल, **नाम**–कु. मैना

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि–सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।

शैक्षणिक प्रेरणा–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 से हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं-

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत प्रतिवर्ष लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।

2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है- कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना, तीन लोक रचना, नवग्रहशांति जिनमंदिर, चौबीस तीर्थंकर मंदिर एवं श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग प्रतिमाओं की स्थापना ।

5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।

6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये करोड़ों णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।

8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।

11. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना एवं धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन करने वाले थियेटर से समन्वित गणिनी ज्ञानमती हीरक जयंती एक्सप्रेस।

12. गणिनी ज्ञानमती दिगम्बर जैन पत्राचार परीक्षा केन्द्र का संचालन।

13. इंटरनेट पर जैनधर्म के इन्साइक्लोपीडिया (www.encyclopediaofjainism. com) का निर्माण।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य नंद्यावर्त महल तीर्थ, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ तथा महावीर जी अतिशय क्षेत्र के महावीर धाम परिसर में निर्मित पंचबालयति दिगम्बर जैन मंदिर का संचालन होता है। वर्तमान में इस संस्थान के अन्तर्गत सम्मेदशिखर जीतीर्थ पर "आचार्य श्री शांतिसागर धाम" का निर्माण प्रारंभ किया जा रहा है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं भौतिक सुख की प्राप्ति करें।

विषयानुक्रमणिका

	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	मंगलाचरण	1
2.	श्री अर्हंत पूजा	3
3.	श्री वासुपूज्य जिनपूजा	8
4.	अथ 108 अर्घ्य	11
5.	जयमाला	24
6.	प्रशस्ति	27
7.	चम्पापुर तीर्थ पूजा	28
8.	भगवान श्री वासुपूज्य की आरती	35
9.	चम्पापुर तीर्थ की आरती	36
10.	णमोकार महामंत्र महिमा	38

मण्डल का नक्शा

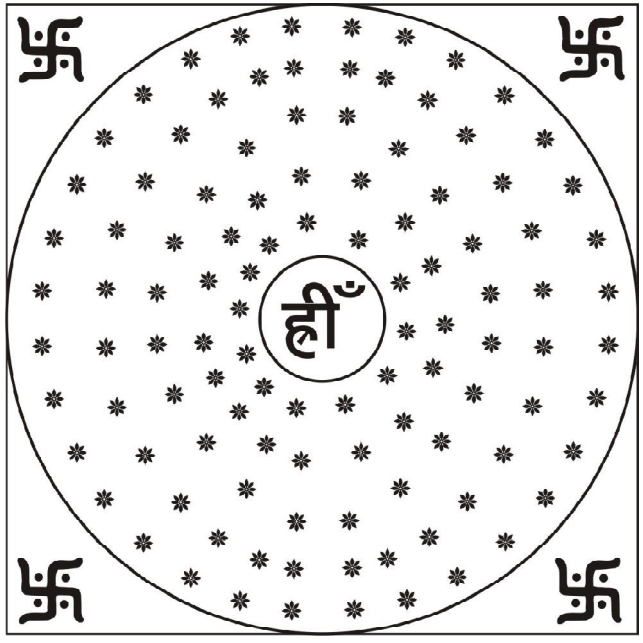

कुल पूजा-3, अर्घ्य-108, पूर्णार्घ्य-1, जयमाला-3

श्री वासुपूज्य विधान

मंगलाचरण

–उपेंद्रवज्रा छंद–

देवेंद्रवृंदैर्नरनाथमुख्यैः, मुनीश्वरैः सर्वगणाधिपैश्च।
सदा प्रपूज्यो भुवनेषु पूज्यः त्वां वासुपूज्यं प्रणमामि भक्त्या।।1।।

–शंभु छंद–

आत्मा औ तनु के अन्तर को, कर तनु से निर्मम हो जाऊँ।
मैं शुद्ध बुद्ध परमात्मा हूँ, यह समझ स्वयं में रम जाऊँ।।
इंद्रिय बल आयु श्वास चार, प्राणों को धर–धर मरता हूँ।
निश्चय नय से नहिं जन्म–मरण, फिर भी निश्चय नहिं करता हूँ।।1।।

मैं इन प्राणों से भिन्न सदा, पुद्गल से भिन्न निराला हूँ।
सुखसत्ता दर्शन ज्ञानवीर्य, चेतनमय प्राणों वाला हूँ।।
वे वासुपूज्य! तव चरण कमल, की भक्ति से यह मिल जावे।
जो खोई शक्ति अनन्त मेरी, तव नाम मंत्र से प्रगटावे।।2।।

चंपापुर में वसुपूज्य पिता, औ प्रसू जयावति इन्द्र नमित।
आसाढ़ वदी छठ को प्रभु ने, माँ गर्भ प्रवेश किया सुरनत।।
फाल्गुन वदि चौदस जन्म लिया, इस तिथि को ही जिनवेश धरा।
सित माघ द्वितीया के प्रभु को, केवल लक्ष्मी ने स्वयं वरा।।3।।

भादों सुदि चौदस को प्रभुवर, चम्पापुर से शिवधाम गये।
बाहत्तर लक्ष वर्ष आयु, दो सौ अस्सी कर तुंग कहे।।
कल्हार कमल छवि महिष चिन्ह, फिर भी तनुमुक्त अनन्तगुणी।
वासव गण पूजित वासुपूज्य! मम दीजे निज सम्पत्ति घनी।।4।।

अथ जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

पूजा नं. १

श्री अर्हंत पूजा

स्थापना–गीता छंद

अरिहंत प्रभु ने घातिया को घात निज सुख पा लिया।
छ्यालीस गुण के नाथ अठरह दोष का सब क्षय किया।।
शत इंद्र नित पूजें उन्हें गणधर मुनी वंदन करें।
हम भी प्रभो! तुम अर्चना के हेतु अभिनन्दन करें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–बसन्ततिलका छंद–

श्रीमज्जिनेंद्र पद में जलधार देऊं।
आतंकपंक जग का सब दूर होवे।।
इच्छानुसार फलदायक कल्पतरू ये।
पूजा जिनेन्द्रप्रभु की त्रय ताप नाशे।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परमेष्ठिभ्यः स्वाहा। (जलं निर्वपामीति स्वाहा।)

काश्मीरि केशर सुचंदन को घिसाऊँ।
चर्चूं जिनेन्द्र पदपंकज में रुचि से।।
संसार के सकल ताप विनाश करती।
पूजा जिनेन्द्र प्रभु की सब सौख्य देती।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परमात्मकेभ्यः चंदनं ... ।

जो कुंदपुष्प कलियों सम दीखते हैं।
धोये सु तंदुल लिये भर थाल में हैं।।
अर्हंत सन्मुख रखूँ बहु पुंज नीके।
पाथेय मोक्षपथ में जन के लिये हो।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनादिनिधनेभ्यः अक्षतं ... ।

मल्ली गुलाब वर पुष्प सुगंधि करते।
अर्हंत के चरण में रुचि से चढ़ाऊँ।।
पापान्धकूप मधि डूब रहे जनों को।
उद्धार हेतु जिनपूजन ही जगत् में।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः सर्वनृसुरासुरपूजितेभ्यः पुष्पं ... ।

शालीय ओदन सुगंधित भोज्यवस्तु।
पीयूष तुल्य चरू लेकर थाल भरके।।
अर्हंत सन्मुख चढ़ा क्षुध व्याधि नाशूँ।
तृप्ती अनंत जिनपूजन से मिलेगी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतज्ञानेभ्यः नैवेद्यं ... ।

जो चित्त का तमसमूह विनाश करके।
त्रैलोक्यगेह वर दीपक दीप ज्योति।।
ले दीप आरति करूँ वरज्ञानज्योति।
पाऊँ अनंत निजज्ञान विकास करके।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतदर्शनेभ्यः दीपं ... ।

जो धूप सुन्दर सुगंध बिखेरती है।
अग्नि विषे जलत धूम्र उड़ावती है।।
खेऊँ दशांगवर धूप जिनेन्द्र आगे।
संपूर्ण पाप जलते वर सौख्य होगा।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतवीर्येभ्यः धूपं ... ।

ये कल्पवृक्ष फल सम अति मिष्ट ताजे।
अमृत समान रस से परिपूर्ण दीखें।।
पूजा करूँ फल चढ़ाकर आपकी मैं।
स्वात्मैक सिद्धि फल प्राप्त करूँ इसी से।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतसौख्येभ्यः फलं ... ।

नीरादि आठ वर द्रव्य संजोय करके।
घंटा ध्वजा चंवर छत्र सुदर्पणादी।।

मांगल्य द्रव्य शुभ लेकर पूजते ही।
संपूर्ण मंगल मिले निज सौख्य पाऊँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परममंगलेभ्यः अर्घ्यं ... ।

श्रीपूज्यपाद जिन के चरणाब्ज नमते।
संपूर्ण इंद्र शिर से अतिभक्ति भावे।।
श्री पूज्य के पदनिकट जलधार देते।
हो शांति लोक त्रय में मुझ भक्त को भी।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः स्वस्ति भद्रं भवतु जगतां शांतये शांतिधारां निष्पादयामि शांतिकृद्भ्यः स्वाहा।

(शांतिधारा करें)

जो इन्द्र भक्ति वश नेत्र हजार करके।
बारह हजार कर तांडव नृत्य करता।।
ऐसे जिनेन्द्रपद पुष्प चढ़ाय करके।
पूजा त्रिकाल कर अनुपम सौख्य पाऊँ।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः ध्यातृभिः अभीप्सितफलेभ्यः स्वाहा।

(पुष्पांजलि चढ़ावें)

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।

जयमाला

–दोहा–

श्री अरिहंत जिनेन्द्र का, धरूँ हृदय में ध्यान।
गाऊँ गुणमणिमालिका, हरूँ सकल अपध्यान।।1।।

–शम्भु छंद–

जय जय प्रभु तीर्थंकर जिनवर, तुम समवसरण में राज रहे।
जय जय अर्हंत् लक्ष्मी पाकर, निज आत्मा में ही आप रहे।।
जन्मत ही दश अतिशय होते, तन में न पसेव न मल आदी।
पयसम सित रुधिर सु समचतुष्क, संस्थान संहनन है आदी।।1।।

अतिशय सुरूप, सुरभित तनु हैं, शुभ लक्षण सहस आठ सौ हैं।
अतुलित बल प्रियहित वचन प्रभो, ये दश अतिशय जन मन मोहें।।
केवल रविप्रगटित होते ही, दश अतिशय अद्भुत ही मानों।
चारों दिश इक-इक योजन तक, सुभिक्ष रहे यह सरधानो।।2।।

हो गगन गमन, नहिं प्राणीवध, नहिं भोजन नहिं उपसर्ग तुम्हें।
चउमुख दीखें सब विद्यापति, नहिं छाया नहिं टिमकार तुम्हें।।
नहिं नख औ केश बढ़े प्रभु के, ये दश अतिशय सुखकारी हैं।
सुरकृत चौदह अतिशय मनहर, जो भव्यों को हितकारी हैं।।3।।

सर्वार्ध मागधीया भाषा, सब प्राणी मैत्री भाव धरें।
सब ऋतु के फल औ फूल खिलें, दर्पणवत् भूरत्नाभ धरें।।
अनुकूल सुगंधित पवन चले, सब जन मन परमानंद भरें।
रजकंटक विरहित भूमि स्वच्छ, गंधोदक वृष्टी देव करें।।4।।

प्रभु पद तल कमल खिलें सुन्दर, शाली आदिक बहु धान्य फलें।
निर्मल आकाश दिशा निर्मल, सुरगण मिल जय जयकार करें।।
अरिहंत देव का श्रीविहार, वर धर्मचक्र चलता आगे।
वसुमंगल द्रव्य रहें आगे, यह विभव मिला जग के त्यागे।।5।।

तरुवर अशोक सुरपुष्प वृष्टि, दिव्यध्वनि, चौंसठ चमर कहें।
सिंहासन भामंडल सुरकृत, दुंदुभि छत्रत्रय शोभ रहें।।
ये प्रातिहार्य हैं आठ कहे, औ दर्शन ज्ञान सौख्य वीरज।
ये चार अनंत चतुष्टय हैं, सब मिलकर छ्यालिस गुण कीरत।।6।।

क्षुध तृषा जन्म मरणादि दोष, अठदश विरहित निर्दोष हुए।
चऊ घाति घात नवलब्धि पाय, सर्वज्ञ प्रभु सुखपोष हुए।।
द्वादशगण के भवि असंख्यात, तुम धुनि सुन हर्षित होते हैं।
सम्यक्त्व सलिल को पाकर के, भव भव के कलिमल धोते हैं।।7।।

मैं भी भवदुःख से घबड़ा कर, अब आप शरण में आया हूँ।
सम्यक्त्व रतन नहिं लुट जावे, बस यही प्रार्थना लाया हूँ।।
संयम की हो पूर्ती भगवन्! औ मरण समाधी पूर्वक हो।
हो केवल 'ज्ञानमती' सिद्धी, जो सर्व गुणों की पूरक हो।।8।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं अर्हत्परमेष्ठिभ्यः जयमाला महार्घ्यं....।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

–दोहा–

मोह अरी को हन हुए, त्रिभुवन पूजा योग्य।
नमो नमो अरिहंत को, पाऊँ सौख्य मनोज्ञ।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं. २

श्रीवासुपूज्य जिनपूजा

अथ स्थापना –गीता छंद

श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्र वासव-गणों से पूजित सदा।
इक्ष्वाकुवंश दिनेश काश्यप-गोत्र पुंगव शर्मदा।।
सप्तर्द्धिभूषित गणधरों से, पूज्य त्रिभुवन वंद्य हैं।
आह्वान कर पूजूँ यहाँ, मिट जाएगा भव फंद है।।1।।

–गीता छंद–

वासुपूज्य तीर्थेश प्रभु, बालयती जगवंद्य।
नमूं नमूं नित भक्ति से, पाऊं परमानंद।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यतीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यतीर्थंकर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यतीर्थंकर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक –गीता छंद

हे नाथ! जग में जन्म व्याधी, बहुत ही दुख दे रही।
अब मेट दीजे इसलिए, त्रयधार दे पूजूँ यहीं।।
श्री वासुपूज्य जिनेंद्र द्वादश, तीर्थकर्ता सिद्ध हैं।
सौ इन्द्र वंदित पद कमल, संपूर्ण सिद्धि निमित्त हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! इस यमराज का, संताप अब नहिं सहन है।
इस हेतु तुम पादाब्ज में, चर्चूं सुगंधित गंध है।।श्री.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! मेरे ज्ञान के, बहु खंड-खंड हुए यहाँ।
कर दो अखंडित ज्ञान तंदुल, पुंज से पूजूँ यहाँ।।श्री.।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! भवशर विश्वजेता, आप ही इसके जयी।
इस हेतु तुम पादाब्ज में, बहु पुष्प अर्पूं मैं यहीं।।श्री.।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! त्रिभुवन अन्न खाया, भूख अब तक ना मिटी।
प्रभु भूख व्याधी मेट दो, इस हेतु चरु अर्पूं अभी।।श्री.।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिरत्न दीपक से कभी, मन का अंधेरा ना भगा।
हे नाथ! तुम आरति करत ही, ज्ञान का सूरज उगा।।श्री.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! मेरे कर्म कैसे, भस्म हों यह युक्ति दो।
मैं धूप खेऊँ अग्नि में, ये कर्म वैरी भस्म हों।।श्री.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! चाहा बहुत फल, बहुते चरण में नत हुआ।
नहिं तृप्ति पायी इसलिए, फल सरस तुम अर्पण किया।।श्री.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! निज के रत्नत्रय, अनमोल श्रेष्ठ अनर्घ हैं।
मुझको दिलावो ''ज्ञानमति'', इस हेतु अर्घ्य समर्घ्य है।।श्री.।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

वासुपूज्य चरणाब्ज, शांतीधारा मैं करूँ।
मिले निजातम स्वाद, तिहुँजग में भी शांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

सुरभित हरसिंगार, जिनपद पुष्पांजलि करूँ।
भरें सौख्य भंडार, रोग शोक संकट टलें।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

(अथ पंचकल्याणक अर्घ्य)

–गीताछंद –

दिव महाशुक्र विमान से, च्युत हो प्रभू चंपापुरी।
वसुपूज्य पितु माता जयावति, गर्भ आये शुभ घरी।।
आषाढ़ कृष्णा छठ तिथी, सुरवृंद माँ पितु को जजें।
हम गर्भकल्याणक जजत, संपूर्ण दुःखों से छुटें।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाषष्ठ्यां श्रीवासुपूज्यतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदी चौदश तिथी, सुरगृह स्वयं बाजे बजे।
जन्में जिनेश्वर उसी क्षण, सुरपति मुकुट भी थे झुके।।
माँ के प्रसूती सद्म जा, शचि ने शिशू को ले लिया।
सुर शैल पर अभिषव हुआ, पूजत जगत भव कम किया।।2।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीवासुपूज्यतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदी चौदश तिथी, वैराग्य मन में आ गया।
सुर पालकी पे प्रभु चढ़े, लौकांतिसुर स्तुति किया।।
इन्द्राणि निर्मित चौक पर, तिष्ठे स्वयं दीक्षा लिया।
प्रभु तपकल्याणक पूजते, मिल जाय जिन दीक्षाप्रिया।।3।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीवासुपूज्यतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वन मनोहर में तरु कदंबक, तले प्रभु थे ध्यान में।
शुभ माघ शुक्ला द्वितीया, प्रभु केवली भास्कर बनें।।
धनदेव निर्मित समवसृति में, गंधकुटि में शोभते।
द्वादशसभा में भव्य नमते, हम प्रभू को पूजते।।4।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लाद्वितीयायां श्रीवासुपूज्यतीर्थंकरज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भादों सुदी चौदश तिथी, चंपापुरी से नाथ ने।
संपूर्ण कर्म विनाश कर, शिववल्लभा के पति बने।।
सौधर्म इन्द्र सुरादिगण, हर्षित हुए वंदन करें।
हम वासुपूज्य जिनेन्द्र की, निर्वाण पूजा को करें।।5।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लाचतुर्दश्यां श्रीवासुपूज्यतीर्थंकरमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य (दोहा) –

वासुपूज्य त्रिभुवन नमित, इन्द्रगणों से वंद्य।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय के, पाऊँ सौख्य अमंद।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यतीर्थंकरपंचकल्याणकाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ 108 अर्घ्य

–दोहा–

वासुपूज्य भगवान के, गुणमणि नंतानंत।
अष्टोत्तर शत गुण जजूँ, पुष्पांजलि विकिरंत।।1।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

सिद्धिरमा के पति प्रभो! आप नाम 'श्रीमान'।
केवलज्ञान विभव जजूं वासुपूज्य भगवान।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीमते श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुवच बिन प्रतिबुद्ध हों, अतः'स्वयंभू' सिद्ध।
वासुपूज्य भगवान को, पूजूँ बनूँ समृद्ध।।2।।

ॐ ह्रीं स्वयंभुवे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम क्षमादि धर्म से, शोभित होकर सिद्ध।
'वृषभ' नाम युत आपको, जजत मिले सब सिद्धि।।3।।

ॐ ह्रीं वृषभाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शंभव' सुखदाता तुम्हीं, श्रेष्ठ जन्म ले नाथ।
जजूँ तीर्थकर आपको, नमूँ नमाकर माथ।।4।।

ॐ ह्रीं शंभवाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शंभू परमानंद सुख, अनुभव करो हमेश।
स्वात्मसुखामृत हेतु मैं, जजूँ वासुपूज्येश।।5।।

ॐ ह्रीं शंभवे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मा चिन्मय शुद्ध बुध, उससे प्रगटे आप।
अतः 'आत्मभू' तीर्थकर, जजत बनूँ निष्पाप।।6।।

ॐ ह्रीं आत्मभुवे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयं शोभते गुण सहित, आप 'स्वयंप्रभ' नाथ।
निजगुण प्रगटन हेतु मैं, जजूँ करूँ भव सार्थ।।7।।

ॐ ह्रीं स्वयंप्रभाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबके स्वामी आप 'प्रभु', मम दुख हरण समर्थ।
जजूँ सर्वसुख हेतु मैं वासुपूज्य अन्वर्थ।।8।।

ॐ ह्रीं प्रभवे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भोगे परमानंदसुख, 'भोक्ता' नाथ महंत।
भव में दुख भोगे बहुत, जजत मिले भव अन्त।।9।।

ॐ ह्रीं भोक्त्रे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान सुचक्षु से, त्रिभुवन में हो व्याप्त।
अतः 'विश्वभू' आप हैं, नमूँ तीर्थकृन्नाथ।।10।।

ॐ ह्रीं विश्वभुवे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुनः न भव को धारते, हे 'अपुनर्भव' सिद्ध।
पुनर्जन्म के नाशने, जजूँ आपको नित्त।।11।।

ॐ ह्रीं अपुनर्भवाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व आत्मा निज सदृश, लख 'विश्वात्मा' आप।
पूर्णज्ञान तीर्थेश को, जजत मिटे संताप।।12।।

ॐ ह्रीं विश्वात्मने श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक के जीव के, स्वामी आप जिनेश।
मेरी भी रक्षा करो, जजूँ 'विश्व लोकेश'।।13।।

ॐ ह्रीं विश्वलोकेशाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी तरफ में चक्षु हैं, केवलदर्शनरूप।
नमूँ 'विश्वतश्चक्षु' को, पाऊँ स्वात्मस्वरूप।।14।।

ॐ ह्रीं विश्वतश्चक्षुषे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कभी क्षरण या क्षय नहीं, जग में आप प्रधान।
'अक्षर' तीर्थंकर तुम्हें, जजत मिले निजथान।।15।।

ॐ ह्रीं अक्षराय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल जगत को जानते, अतः 'विश्ववित्' नाथ।
सकल ज्ञान मेरा करो, सदा नमाऊँ माथ।।16।।

ॐ ह्रीं विश्वविदे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल विमल कैवल्य के, स्वामी नमूँ हमेश।
सब विद्यापति के पती, आप 'विश्वविद्येश'।।17।।

ॐ ह्रीं विश्वविद्येशाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब पदार्थ को जानकर, सबको दें उपदेश।
'विश्वयोनि' को नित जजूँ, मिटे सकल भव क्लेश।।18।।

ॐ ह्रीं विश्वयोनये श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज स्वरूप को नाश नहिं, अविनाशी प्रभु नित्य।
अतः 'अनश्वर' तीर्थकर, जजत लहूँ सुख नित्य।।19।।

ॐ ह्रीं अनश्वराय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जग को देखा अतः, सकलदर्शि हो आप।
नाम 'विश्वदृश्वा' प्रभो, जजत मिटे भव ताप।।20।।

ॐ ह्रीं विश्वदृश्वने श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान प्रकाश से, व्याप्त किया सब विश्व।
नाम मंत्र 'विभु' आपका, जजत दिखे सब विश्व।।21।।

ॐ ह्रीं विभवे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चहुँगति भ्रमते जीव को, पहुँचाते शिवमाहिं।
'धाता' परम दयालु हो, पूजत दुःख नशाहिं।।22।।

ॐ ह्रीं धात्रे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक के ईश तुम, कर्मदूर 'विश्वेश'।
रत्नत्रय निधि हेतु मैं, वंदूँ भक्ति हमेश।।23।।

ॐ ह्रीं विश्वेशाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हित उपदेशक जीव के, नेत्र समान महान्।
अतः 'विश्वलोचन' जजूं, वासुपूज्य सुखखान।।24।।

ॐ ह्रीं विश्वलोचनाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक अलोक समस्त को, ज्ञानज्योति से व्याप।
अतः 'विश्वव्यापी' प्रभो, जजत मिटे भव ताप।।25।।

ॐ ह्रीं विश्वव्यापिने श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मविधी कहते 'विधू' कर्ममर्महर नाथ।
ज्ञानकिरण से मोहतम, हरो जजूँ यह स्वार्थ।।26।।

ॐ ह्रीं विधवे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज सृष्टी को निर्मिता, 'वेधा' जगविख्यात।
धर्मसृष्टि सर्जन किया, नमत मिटे भव आर्त।।27।

ॐ ह्रीं वेधसे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शाश्वत' कभी न नष्ट हों, वासुपूज्य अमलान।
निज पद शाश्वत दीजिये, जजूँ सदा धर ध्यान।।28।।

ॐ ह्रीं शाश्वताय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में चहुँदिशी, मुख दीखे प्रभु आप।
अतः 'विश्वतोमुख' तुम्हीं, नमत हरूँ संताप।।29।।

ॐ ह्रीं विश्वतोमुखाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मभूमि में नित्य ही, उपदेशा षट्कर्म।
अतः 'विश्वकर्मा' तुम्हीं, जजत मिले निजशर्म[1]।।30।।

ॐ ह्रीं विश्वकर्मणे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. सुख।

जग में सबमें ज्येष्ठ तुम, 'जगज्येष्ठ' भगवान।
जजूँ भक्ति से नित्य मैं, करो मुझे अमलान।।31।

ॐ ह्रीं जगज्ज्येष्ठाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! आपके ज्ञान में, सब पदार्थ झलकंत।
'विश्वमूर्ति' तुमको जजत, निज गुणमणि विलसंत।।32।।

ॐ ह्रीं विश्वमूर्तये श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मशत्रु को जीतते, सद्दृष्टी मुनि आदि।
उनके ईश्वर को नमूँ, प्रभो! 'जिनेश्वर' नादि।।33।।

ॐ ह्रीं जिनेश्वराय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व जगत इक समय में, अवलोकें प्रभु आप।
नमूँ 'विश्वदृक्' को सतत, समकित हो निष्पाप।।34।।

ॐ ह्रीं विश्वदृशे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब प्राणी के ईश तुम, अतः 'विश्वभूतेश'।
नमत ज्ञान कलिका खिले, मिलता सौख्य अशेष।।35।।

ॐ ह्रीं विश्वभूतेशाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल विश्व को तेज से, व्याप्त किया भगवान।
'विश्वज्योति' को नित नमूँ, नशें कर्म बलवान।।36।।

ॐ ह्रीं विश्वज्योतिषे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम से बढ़कर नहिं कोई, जग में ईश्वर होय।
नमूँ 'अनीश्वर' को सतत, कर्मकालिमा धोय।।37।।

ॐ ह्रीं अनीश्वराय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधादिक अरि जीत के, हुये आप 'जिन' सिद्ध।
ज्ञानादिक आनन्त्य गुण, जजत लहूं नव निद्ध।।38।।

ॐ ह्रीं जिनाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति उत्कृष्ट स्वभाव से, जो नित ही जयशील।
'जिष्णु' सकल परमात्मा, नमत बनूँ जयशील।।39।।

ॐ ह्रीं जिष्णवे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु अनंत गुण आपके, माप सके ना कोय।
नाथ अमेयात्मा अतः, नमत सिद्धपद होय।।40।।

ॐ ह्रीं अमेयात्मने श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पृथ्वी के ईश्वर तुम्हीं, 'विश्वरीश' शुभ नाम।
निजगुण संपद हेतु मैं, पूजूँ करूँ प्रणाम।।41।।

ॐ ह्रीं विश्वरीशाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व जगत के जीव के, रक्षक हो भगवंत।
नमूँ 'जगत्पति' आपको, जजत करूँ भव अंत।।42।।

ॐ ह्रीं जगत्पतये श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस अनंत संसार को, जीता धर ध्यानास्त्र।
प्रभु 'अनंतजित्' हो गये, जजत मिले धर्मास्त्र।।43।।

ॐ ह्रीं अनंतजिते श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन वच के गोचर नहीं, आत्मस्वरूप अचिन्त्य।
प्रभो 'अचिन्त्यात्मा' तुम्हीं, पूजत सौख्य अनिंद्य।।44।।

ॐ ह्रीं अचिन्त्यात्मने श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव्यों का उपकार कर, 'भव्यबंधु' हो आप।
रत्नत्रय संपत् भरो, जजूँ करो निष्पाप।।45।।

ॐ ह्रीं भव्यबन्धवे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह आवरण द्वय तथा, अन्तराय को घात।
नाथ 'अबन्धन' हो गये, नमत मिले सुख सात।।46।।

ॐ ह्रीं अबन्धनाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृतयुग के आरंभ में, हुये तीर्थंकर देव।
जजत 'युगादीपुरुष' को, मिले स्वपद स्वयमेव।।47।।

ॐ ह्रीं युगादिपुरुषाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञानादिक अतुल, गुणगण वृद्धि करंत।
'ब्रह्मा' हो प्रभु आप ही, जजत बने गुणवंत।।48।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मणे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँच ज्ञानमय आप हैं, पंच परमगुरु आप।
'पंचब्रह्ममय' आपको, नमत मिटे भवताप।।49।।

ॐ ह्रीं पंचब्रह्ममयाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष रूप आनंदमय, 'शिव' कहलाये नाथ।
ज्ञानानंद मिले मुझे, जजत करूँ भव घात।।50।।

ॐ ह्रीं शिवाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सखी छंद–

भविजन का पालन करते, सब गुण को पूरण करते।
'पर' नाम मंत्र पूजूँ मैं, पर पुद्गल से छूटूँ मैं।।51।।

ॐ ह्रीं पराय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परतर' हो तीर्थंकर हो, जग में उत्कृष्ट तुम्हीं हो।
तुम नाम मंत्र पूजन से, जिन में समरससुख प्रगटे।।52।।

ॐ ह्रीं परतराय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय से गम्य न तुम हो, प्रभु 'सूक्ष्म' नामधर तुम हो।
तुम नाम मंत्र मैं पूजूँ, सब जन्म मरण से छूटूँ।।53।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्माय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुस्थित हो परम सुपद में, 'परमेष्ठी' नाम जगत में।
तुम नाम मंत्र की अर्चा, जिनगुण की संपति भर्ता।।54।।

ॐ ह्रीं परमेष्ठिने श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु सदा एक से रहते, इसलिये 'सनातन' कहते।
मन वच तन से मैं वंदूँ, यमराज दुःख को खंडूँ।।55।।

ॐ ह्रीं सनातनाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'स्वयंज्योति' हो जग में, आत्मा रविसम चमके है।
एकाग्रमना पूजूँ मैं, सब दुःखों से छूटूं मैं।।56।।

ॐ ह्रीं स्वयंज्योतिषे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अज' हो उत्पन्न कभी ना, प्रभु तुम मृत्यू से हीना।
मैं पूजूँ श्रद्धा धरके, मुझ में रत्नत्रय प्रगटे।।57।।

ॐ ह्रीं अजाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहिं गर्भवास है प्रभु को, अतएव 'अजन्मा' तुम हो।
मैं पूजूँ भक्ति सहित हो, परमानंदामृत भर दो।।58।।

ॐ ह्रीं अजन्मने श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादश अंगों की रचना, तुम से ही है उत्पन्ना।
हो 'ब्रह्मयोनि' भगवंता, पूजत होऊँ सुखवंता।।59।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मयोनये श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योनी हैं लाख चुरासी, उनमें उत्पत्ति न होती।
इसलिये 'अयोनिज' भगवन्! पूजूँ नहिं घूमूँ भववन।।60।।

ॐ ह्रीं अयोनिजाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह अरी को जीते, 'मोहारि विजयि'[1] हो नीके।
मैं अशुभ कर्म को नाशूं, निज में सज्ज्ञान प्रकाशूँ।।61।।

ॐ ह्रीं मोहारिविजयिने श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोत्कर्ष से जयते, 'जेता' इससे मुनि कहते।
मैं पूजूँ तुम्हें रुची से, आत्मा में जयश्री प्रगटे।।62।।

ॐ ह्रीं जेत्रे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब श्रीविहार प्रभु का हो, वृषचक्र अग्र चलता हो।
अतएव 'धर्मचक्री' हो, जजते निजवृषचक्री हो।।63।।

ॐ ह्रीं धर्मचक्रिणे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु दया ध्वजा अतिशायी, तुम नाम मंत्र सुखदायी।
अतएव 'दयाध्वज' पूजूँ, हो दया तभी मैं छूटूँ।।64।।

ॐ ह्रीं दयाध्वजाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब शांत हुये कर्मारी, पूजत हो सुख अविकारी।
अतएव 'प्रशांतारी' को, मैं नमूँ दुःखहारी को।।65।।

ॐ ह्रीं प्रशांतारये श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु हो अनंत ज्ञानात्मा, नहिं अंत कभी हो आत्मा।
अतएव 'अनन्तात्मा' हो, पूजत मम शुद्धात्मा हो।।66।।

ॐ ह्रीं अनन्तात्मने श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1.टीका में 'मोहारिः' और 'विजयी' ऐसे दो पद लिखे हैं। आगे 'सिद्धसिद्धान्तवित्' एक किया है।

प्रभु शुक्लध्यान को धरके, 'योगी' हो जग में चमके।
मुझमें समतारस छलके, मैं पूजूँ बहुरुचि धरके।।67।।
ॐ ह्रीं योगिने श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर देवादि मुनीशा, उनसे अर्चित जगदीशा।
हे 'योगिश्वरार्चित' नाथा, मैं नमूँ नमाऊँ माथा।।68।।
ॐ ह्रीं योगीश्वरार्चिताय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मा-आत्मा को जाने, अतएव 'ब्रह्मविद्' मानें।
निज आत्मज्ञान के हेतू, तुम भक्ती भवदधि सेतू।।69।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मविदे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो ब्रह्म मर्म को जानें, करूणा का मर्म पिछानें।
'ब्रह्मातत्त्वज्ञ' बखाने, मैं नमूँ मोहतम हानें।।70।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मतत्त्वज्ञाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो केवलज्ञान स्वविद्या, जाने अनंतगुण विद्या।
'ब्रह्मोद्याावित्' वे स्वामी, मैं नमूँ बनूँ शिवगामी।।71।
ॐ ह्रीं ब्रह्मोद्याविदे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिवहेतू यत्न करें जो, यतिवर उनके ईश्वर जो।
मैं नमूँ 'यतीश्वर' आत्मा, पूजत प्रगटे अंतरात्मा।।72।।
ॐ ह्रीं यतीश्वराय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब कर्म कलंक विदूरा, अतएव 'शुद्ध' गुणपूरा।
मैं पूजूँ भक्ति बढ़ाके, हर्षूं निज के गुण पाके।।73।।
ॐ ह्रीं शुद्धाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो केवलज्ञान स्वरूपी, बुद्धी से 'बुद्ध' बने जी।
मुझमें ज्ञानामृत भरिये, मैं पूजूँ भव दुःख हरिये।।74।।
ॐ ह्रीं बुद्धाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो शुद्ध ज्ञान से चमके, अतएव 'प्रबुद्धात्मा' हैं।
निज पर का ज्ञान प्रगट हो, अतएव नमूँ प्रमुदित हो।।75।।
ॐ ह्रीं प्रबुद्धात्मने श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब कारज सिद्ध तुम्हारे, पूर्ती कर मुक्ति पधारे।
'सिद्धार्थ' ख्यात हैं जग में, पूजत ही सुख हो निज में।।76।।
ॐ ह्रीं सिद्धार्थाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु शासन सिद्ध कहा है, वह दया धर्म की जड़ है।
मैं नमूँ 'सिद्धशासन' को, करुं आत्मा पर शासन जो।।77।।
ॐ ह्रीं सिद्धशासनाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृतकृत्य हुये भगवंता, लोकाग्र विराजें जो जा।
उन 'सिद्ध'[1] प्रभू को पूजूँ, संपूर्ण कर्म से छूटूँ।।78।।
ॐ ह्रीं सिद्धाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो द्वादशांग सिद्धांता, वह कहा अनादि अनन्ता।
'सिद्धांतसुवित्'[2] कहलाये, हम भक्ती से गुण गायें।।79।।
ॐ ह्रीं सिद्धान्तविदे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनियों ने नित आराध्या, अगणित गुणमणि को साध्या।
तुम 'ध्येय' ध्यान के योग्या, पूजत होते आरोग्या।।80।।
ॐ ह्रीं ध्येयाय श्री वासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सिद्ध–देवगण माने, उनके आराध्य बखाने।
हो 'सिद्धसाध्य' तीर्थंकर, पूजत प्रगटे परमेश्वर।।81।।
ॐ ह्रीं सिद्धसाध्याय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो सब जग के हितकारी, सुखकारी सब अघहारी।
अतएव 'जगद्धित' स्वामी, पूजत होऊँ शिवगामी।।82।।
ॐ ह्रीं जगद्धिताय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण क्षमा आप में शोभे, शिवतिय का भी मन लोभें।
अतएव 'सहिष्णु' तुम्हीं हो, मेरे में यह गुण भर दो।।83।।
ॐ ह्रीं सहिष्णवे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. सहस्रनाम टीका पुस्तक में 'सिद्ध' पाठ है। 2. सहस्रनाम टीका में 'सिद्धसिद्धांतवित्।

नहिं निज स्वरूप से च्युत हो, अतएव आप अच्युत हो।
परमात्मनिष्ठ पद पाऊँ, इसलिये आपको ध्याऊँ।।84।।
ॐ ह्रीं अच्युताय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहिं होता अन्त कभी भी, अतएव 'अनंत' तुम्हीं ही।
हे वासुपूज्य तीर्थंकर, दर्पणवत् झलके सब जग।।85।।
ॐ ह्रीं अनन्ताय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रभविष्णु' समर्थ तुम्हीं हो, शक्ती अनंतयुत ही हो।
मैं भी समर्थ हो जाऊँ, निज गुण पंकज विकसाऊँ।।86।।
ॐ ह्रीं प्रभविष्णवे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्कृष्ट जन्मधर स्वामी, भवपंच विनाशी नामी।
इसलिये 'भवोद्भव' ध्याऊँ, नहिं अन्य शरण अब जाऊँ।।87।।
ॐ ह्रीं भवोद्भवाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'प्रभूष्णु' कहाये, गणधर मुनिगण गुण गायें।
शक्तीशाली तुम पूजा, इस सम नहिं सुकृत दूजा।।88।।
ॐ ह्रीं प्रभूष्णवे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो गई जरा भी जीर्णा, अतएव 'अजर' गुणपूर्णा।
है अजर अमर निज आत्मा, पूजत पाऊँ शुद्धात्मा।।89।।
ॐ ह्रीं अजराय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहिं पूजा शक्य तुम्हारी, इससे 'अयज्य'[1] गुणधारी।
मैं ग्रहण करूँ निज आत्मा, ध्याऊँ वंदूँ शुद्धात्मा।।90।।
ॐ ह्रीं अयज्याय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रवि शशि करोड़ की आभा, उनसे भी अधिक गुणाभा।
'भ्राजिष्णु' आप भगवंता, पूजत हो सौख्य अनंता।।91।।
ॐ ह्रीं भ्राजिष्णवे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल बुद्धी के स्वामी, 'धीश्वर' हो अंतर्यामी।
मैं केवलज्ञान उपाऊँ, अतएव प्रभो! गुण गाऊँ।।92।।
ॐ ह्रीं धीश्वराय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. अजर्यः पाठ है।

नहिं नाश कभी भी होता, 'अव्यय' गुण भव दुख धोता।
व्ययरहित हमारी आत्मा, चिंतामणि शुद्ध चिदात्मा।।93।।
ॐ ह्रीं अव्ययाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मेंधन दहन किया है, स्व 'विभावसु' नाम लिया है।
या शशि अमृत बरसाते, पूजत ही कर्म जलाते।।94।।
ॐ ह्रीं विभावसवे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में नहिं जन्म धरें जो, श्री 'असंभूष्णु' प्रभु हैं वो।
पूजत ही साम्य बसेरा, नहिं पुनर्जन्म हो मेरा ।।95।।
ॐ ह्रीं असंभूष्णवे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयमेव सिद्ध बन प्रगटे, मुनि 'स्वयंभूष्णु' हैं कहते।
मैं स्वयं स्वयंपद पाऊँ, भव भव के दुःख नशाऊँ।।96।।
ॐ ह्रीं स्वयंभूष्णवे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर होकर जन्मे, अतएव 'पुरातन' सच में।
मैं वंदूं निज सुख हेतू, पाऊँ भवदधि का सेतू।।97।।
ॐ ह्रीं पुरातनाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्कृष्ट केवली ज्ञानी, परमात्मा अंतर्यामी।
वंदूं धर मन अभिलाषा, पूरी हो शिवपद आशा।।98।।
ॐ ह्रीं परमात्मने श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्कृष्ट नेत्र त्रिभुवन में, हो 'परंज्योति' मुनिगण में।
मैं आत्मज्योति के हेतू, पूजूँ तुम हो भवसेतू।।99।।
ॐ ह्रीं परंज्योतिषे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमेश्वर तीनों जग के, 'त्रिजगत्परमेश्वर' कहते।
मैं नमूं नमूं तुम पद में, रत्नत्रय प्रगटे निज में।।100।।
ॐ ह्रीं त्रिजगत्परमेश्वराय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा–

'महामुनी' प्रभु आप, बालब्रह्मचारी प्रथम।
वासुपूज्य भगवान! पूजत ही सुखसंपदा।।101।।

ॐ ह्रीं महामुनये श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि हो मौन धरंत, प्रभू 'महामौनी' तुम्हीं।
वासुपूज्य प्रभु पूज्य, रोग शोक संकट टले।।102।।

ॐ ह्रीं महामौनिने श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म शुक्लद्वय ध्यान, धार 'महाध्यानी'[1] हुये।
वासुपूज्य तुम वंद्य, करते ही सब सुख मिले।।103।।

ॐ ह्रीं महाध्यानिने श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण जितेन्द्रिय आप, नाम 'महादम' धारते।
वासुपूज्य भगवान, पूजत आतम निधि मिले।।104।।

ॐ ह्रीं महादमाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ क्षमा के ईश, नाम 'महाक्षम' सुर कहें।
वासुपूज्य भगवान, पूजूं मैं अतिभाव से।।105।।

ॐ ह्रीं महाक्षमाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अठरह सहस सुशील, 'महाशील' तुम नाम है।
वासुपूज्य गुणशील, नाममंत्र मैं पूजहूँ।।106।।

ॐ ह्रीं महाशीलाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप अग्नी में आप, कर्मेंधन को होमिया[1]।
'महायज्ञ' तुम नाथ, पूजूँ भक्ति बढ़ाय के।।107।।

ॐ ह्रीं महायज्ञाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय पूज्य जिनेश! नाम 'महामख' धारते।
वासुपूज्य भगवान, पूजत ही सब सुख मिले।।108।।

ॐ ह्रीं महामखाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. होम कर दिया।

–पूर्णार्घ्य –

अष्टोत्तर शत गुण धनी, वासुपूज्य भगवान।
पूरण अर्घ्य चढ़ाय के, जजूं करूं गुणवान।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीमदादि–अष्टोत्तरशतगुणसमन्विताय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय नमः।**

(सुगंधित पुष्पों से, लौंग या पीले चावल से 108 बार
27 बार या 9 बार जाप्य करें)

जयमाला

–दोहा –

घाति चतुष्टय घात कर, प्रभु तुम हुये कृतार्थ।
नव केवल लब्धी रमा, रमणी किया सनाथ।।1।।

–शेरछंद –

प्रभु दर्शमोहनीय को निर्मूल किया है।
सम्यक्त्व क्षायिकाख्य को परिपूर्ण किया है।।
चारित्र मोहनीय का विनाश जब किया।
क्षायिक चरित्र नाम यथाख्यात को लिया।।2।।

संपूर्ण ज्ञानावर्ण का जब आप क्षय किया।
कैवल्य ज्ञान से त्रिलोक जान सब लिया।।
प्रभु दर्शनावरण के क्षय से दर्श अनंता।
सब लोक औ अलोक देखते हो तुरंता।।3।।

दानांतराय नाश के अनंत प्राणि को।
देते अभय उपदेश तुम शिवपथ का दान जो।।

लाभान्तराय का समस्त नाश जब किया।
क्षायिक अनंतलाभ का तब लाभ प्रभु लिया।।4।।

जिससे परमशुभ सूक्ष्म दिव्य नंत वर्गणा।
पुद्गलमयी प्रत्येक समय पावते घना।।
जिससे न कवलाहार हो फिर भी तनू रहे।
शिवप्राप्त होने तक शरीर भी टिका रहे।।5।।

भोगांतराय नाश के अतिशय सुभोग हैं।
सुरपुष्पवृष्टि गंध उदकवृष्टि शोभ हैं।।
पग के तले वरपद्म रचें देवगण सदा।
सौगंध्य शीतपवन आदि सौख्य शर्मदा।।6।।

उपभोग अन्तराय का क्षय हो गया जभी।
प्रभु सातिशय उपभोग को भी पा लिया तभी।।
सिंहासनादि छत्र चंवर तरु अशोक हैं।
सुर दुंदुभी भाचक्र दिव्यध्वनि मनोज्ञ हैं।।7।।

वीर्यान्तराय नाश से आनन्त्य वीर्य है।
होते न कभी श्रांत आप धीर वीर हैं।।
प्रभु चार घाति नाश के नव लब्धि पा लिया।
आनन्त्य ज्ञान आदि चतुष्टय प्रमुख किया।।8।।

श्रीधर्म आदि छ्यासठ गणधर गुरू रहें।
मुनिराज बाहत्तर हजार ध्यानरत कहें।।
इक लाख छह हजार 'सेना' आदि आर्यिका।
दो लाख कहें श्रावक चउ लाख श्राविका।।9।।

सत्तर धनुष उत्तुंग देह महिष चिह्न है।
आयू बहत्तर लाख वर्ष लाल वर्ण है।।
फिर भी तो निराकार वर्ण आदि शून्य हो।
आनन्त्य काल तक तो सिद्धक्षेत्र में रहो।।10।।

प्रभु आप सर्व शक्तिमान कीर्ति को सुना।
इस हेतु से ही आज यहाँ मैं दिया धरना।।
अब तारिये न तारिये यह आपकी मरजी।
बस ''ज्ञानमती'' पूरिये यदि मानिये अरजी।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

श्री वासुपूज्य विधान जो जन, भक्ति श्रद्धा से करें।
सब रोग शोक निमूल कर, दारिद्र संकट परिहरें।।
अद्भुत अलौकिक नर सुरों के, अभ्युदय को पाय के।
'सज्ज्ञानमति' रविकिरण से, भविजन कमल विकससायेंगे।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

प्रशस्ति

-शुभु छंद-

त्रिभुवन में धर्म वही उत्तम, जो श्रेष्ठ सुखों में धरता है।
सांसारिक सभी सौख्य देकर, मुक्ती पद तक पहुँचाता है।।
इस रत्नत्रयमय धर्मतीर्थ के, कर्ता तीर्थंकर बनते।
इनको प्रणमूँ मैं बार बार, ये सर्व आधि व्याधी हरते।।1।।

श्री महावीर के शासन में, श्री कुंदकुंद आम्नाय प्रथित।
सरस्वतीगच्छ गण बलात्कार से, जैन दिगम्बर धर्म विशद।।
इस परम्परा में सदी बीसवीं, के आचार्य प्रथम गुरुवर।
चारित्र चक्रवर्ती श्री शान्तीसागर सबके गुरू प्रवर।।2।।

इन प्रथमशिष्य पट्टाधिप श्री, गुरु वीरसागराचार्य हुए।
मुझको ये आर्यिका ज्ञानमती, करके अन्वर्थक नाम दिये।।
इन रत्नत्रय दाता गुरु को, है मेरा वंदन बार बार।
माँ सरस्वती को नित्य नमूँ, जिनका मुझ पर है बहूपकार।।3।।

यह वासुपूज्य जिनवर विधान, रचना तीर्थंकर भक्ती से।
भव भव में जिनवर भक्ति मिले, है यही याचना प्रभुजी से।।
इस दुषमकाल के अन्त समय तक, जैनधर्म जयंवत रहे।
इस हस्तिनागपुर में तब तक, यह जंबूद्वीप स्थायी रहे।।4।।

-दोहा-

गणिनी ज्ञानमती रचित, यह विधान सुखकार।
भव्यों को सुख शांति दे, भरे सौख्य भण्डार।।5।।

इति श्रीवासुपूज्यविधानं संपूर्णम्।
इति शं भूयात्।

चम्पापुरी तीर्थ पूजा

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज-मेरे देश की धरती.....

चम्पापुर नगरी वासुपूज्य के जन्म से धन्य हुई है,
चम्पापुर नगरी.....।।टेक.।।
जिनशासन के बारहवें तीर्थंकर श्री वासुपूज्य स्वामी।
उनके पाँचों कल्याणक से, चम्पापुर की धरती नामी।।
वसुपूज्य पिता के साथ जयावति माता धन्य हुई है।।
चम्पापुर.।।1।।
उस चम्पापुर तीरथ का मैं, आह्वानन स्थापन कर लूँ।
सन्निधीकरण कर वासुपूज्य, प्रभु को मन में धारण कर लूँ।।
इस पूजा विधि से पूजनसामग्री भी धन्य हुई है।।
चम्पापुर.।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

-अष्टक (शंभु छन्द)-

जीवात्मा एवं कर्मों का, सम्बन्ध अनादीकाल से है।
बस इसीलिए जीवन व मरण, हो रहा अनादीकाल से है।।
अब जन्मजरामृतिनाश हेतु, जल से प्रभु का अर्चन कर लूँ।
प्रभु वासूपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुरि का वंदन कर लूँ।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय जन्मजरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यादर्शन के कारण जीव, अनादी से भव भ्रमण करें।
सम्यग्दर्शन यदि मिल जावे, तब ही उसका उपशमन करे।।
भव आतप के विध्वंस हेतु, चंदन से प्रभु पूजन कर लूँ।
प्रभु वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर का वन्दन कर लूँ।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

है क्षणिक विनश्वर पद प्राप्ती, के लिए सदा अन्याय यहाँ।
आत्मा का लाभ न ले पाया, है अविनश्वर साम्राज्य जहाँ।।
अब अक्षय पद पाने हेतू, अक्षत से प्रभु पूजन कर लूँ।
प्रभु वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर का वन्दन कर लूँ।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस कामदेव के वश होकर, सच्चे सुख को सब भूल रहे।
जिनराज उसी को वश में कर, आतम अमृत में डूब रहे।।
उस कामबाण के नाश हेतु, पुष्पों से प्रभु पूजन कर लूँ।
प्रभु वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर का वन्दन कर लूँ।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय कामबाण-विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

है क्षुधावेदनी कर्म सभी के, संग अनादि से लगा हुआ।
उसके ही तीव्र उदय होने पर, नहिं अभक्ष्य का भान रहा।।
वह क्षुधारोग विध्वंस हेतु, नैवेद्य से प्रभु पूजन कर लूँ।
प्रभु वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर का वन्दन कर लूँ।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्मों में मोहकर्म, सबसे बलवान कहा जाता।
उससे निजरूप न दिखे अतः, वह अंधकार माना जाता।।

अब मोहतिमिर के नाश हेतु, दीपक से प्रभु पूजन कर लूँ।
प्रभु वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर का वन्दन कर लूँ।।6।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्मों के नाश हेतु, जिनराज तपस्या करते हैं।
क्रमशः उनके नाशन हेतू, श्रावकजन पूजा करते हैं।।
उन कर्मों की उपशांति हेतु, पूजन में धूप दहन कर लूँ।
प्रभु वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर का वन्दन कर लूँ।।7।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मैंने अनादि से इस जग में, ग्रैवेयक तक फल प्राप्त किया।
लेकिन सम्यक्चारित्र बिना, नहिं मुक्ति योग्य फल प्राप्त किया।।
अब मोक्षमहाफल प्राप्ति हेतु, फल से प्रभु की पूजन कर लूँ।
प्रभु वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर का वन्दन कर लूँ।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमुक्ता आदि मिला करके, मैं अर्घ्य सजाकर ले आया।
''चन्दनामती'' प्रभु पूजन कर, चाहूँ तीरथ पद की छाया।।
अब पद अनर्घ्य की प्राप्ति हेतु, मैं अर्घ्य चढ़ा प्रणमन कर लूँ।
प्रभु वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर का वन्दन कर लूँ।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – **गंगनदी का नीर ले, डालूँ जल की धार।**
देश राष्ट्र में शांति हो, मन में यही विचार।।10।।

शान्तये शांतिधारा

चम्पापुर उद्यान से, पुष्प सुगंधित लाय।
पुष्पांजलि अर्पण करूँ, मन में अति हरषाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः

चम्पापुरी तीर्थक्षेत्र के अर्घ्य (शेर छन्द)

भगवान वासुपूज्य जहाँ गर्भ में आये।
आषाढ़ कृष्णा छठ तिथी सुरगण वहाँ आये।।
माता जयावती पिता वसुपूज्य का आँगन।
रत्नों से भर गया करूँ उस भूमि का यजन।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथगर्भकल्याणकपवित्रचम्पापुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदी चौदश जहाँ प्रभु का जन्म हुआ।
स्वर्गों में सुरपती का मुकुट स्वयं झुक गया।।
चम्पापुरी नगरी की पूज्यता है इसलिए।
मैं अर्घ्य चढ़ाकर जजूँ उस भू को इसलिए।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मकल्याणकपवित्रचम्पापुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदी चौदश को ही वैराग्य हुआ था।
प्रभु जी ने स्वयं दीक्षा स्वीकार लिया था।।
उस दीक्षाकल्याणक पवित्र भूमि को नमन।
मंदारगिरि उद्यान का है भाव से अर्चन।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथदीक्षाकल्याणकपवित्रचम्पापुरीनिकटस्थ-मंदारगिरितीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ माघशुक्ला दुतिया को ज्ञान हो गया।
जिनवर के घातिकर्म का विनाश हो गया।।
मंदारगिरि का पूज्य वह उद्यान मनोहर।
पूजूँ समवसरण का स्थल वह मनोहर।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथकेवलज्ञानकल्याणकपवित्रचम्पापुरी-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भादों सुदी चौदश को प्रभू मोक्ष पा गये।
सम्पूर्ण कर्म नाश अचल सौख्य पा गये।।

निर्वाण कल्याणक मनाने इन्द्र आ गये।
मंदारगिरि जजूँ जहाँ से सिद्धि पा गये।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथमोक्षकल्याणकपवित्रचम्पापुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-पूर्णार्घ्य-

चम्पापुरी इक मात्र ऐसा तीर्थ है पावन।
जहाँ वासुपूज्य प्रभु के हुए पाँचों कल्याणक।।
चम्पापुरी में माना मंदारगिरि स्थल।
पूजूँ जहाँ प्रसिद्ध वासुपूज्य धर्मस्थल।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथगर्भजन्मतपकेवलज्ञानमोक्षपंचकल्याणक-पवित्रचम्पापुरी-मंदारगिरितीर्थक्षेत्राभ्यां पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं चम्पापुरीजन्मभूमिपवित्रीकृत–श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

-दोहा-

धर्मतीर्थ वर्तन जहाँ, हुआ वही है तीर्थ।
नमन करूँ उस तीर्थ को, पाऊँ आतम कीर्ति।।1।।

-नरेन्द्र छन्द-

चम्पापुर नगरी में नृप वसुपूज्य राज्य करते थे।
न्यायनीति में दक्ष प्रजा का न्याय किया करते थे।।
धर्मपरायण श्रावक वे प्रभु भक्ति सदा करते थे।
षट्कर्तव्यों में रत रहकर शिवपथ पर चलते थे।।2।।

कर विवाह गुणयुक्त जयावती रानी को वर लाये।
सांसारिक सुख भोग मनोहर जीवनकाल बितायें।।
एक दिवस देवों की टोली ले धनपति वहाँ आये।
रत्नवृष्टि कर इन्द्राज्ञा से नगरी खूब सजाये।।3।।

जान गये तब राजा रानी तीर्थंकर आएंगे।
छः महीने पश्चात् गर्भकल्याणक मनवाएंगे।।
खुशियों में कैसे बीते छह माह पता नहिं पाया।
आखिर इक रात्री में रानी को सपना हो आया।।4।।

सोलह सपनों के फल में वसुपूज्य ने यह बतलाया।
इक तीर्थंकर बालक रानी तेरे गरभ में आया।।
खुशियों में डूबी रानी अपने महलों में रहतीं।
दिक्कुमारियाँ सेवा में आ उनसे प्रश्न उचरतीं।।5।।

धीरे-धीरे बीत गये नव मास घड़ी वह आई।
तीर्थंकर का जन्म हुआ वहाँ बजने लगी बधाई।।
जन्मकल्याणक का उत्सव इन्द्रों ने आन मनाया।
वासुपूज्य यह नामकरण तीर्थंकर शिशु ने पाया।।6।।

वस्त्राभूषण दिव्य पहन प्रभु पलने में झूले थे।
क्रमशः घुटने के बल चलकर देवों संग घूमे थे।।
उनकी मीठी और तोतली बोली जब माँ सुनती।
मानो जग की सारी निधियाँ उनको फीकी लगतीं।।7।।

तीर्थंकर के बाल्यकाल का वर्णन कैसे करना।
इन्द्रपुरी के सुख भी उनके आगे तुच्छ ही कहना।।
बचपन से यौवन काया को वासुपूज्य ने पाया।
मात-पिता के कहने पर भी ब्याह नहीं रचवाया।।8।।

बालयती बन तप करके कैवल्यज्ञान उपजाया।
घाति अघाती कर्म नाश कर मोक्षधाम प्रगटाया।।
चम्पापुर उनके पाँचों कल्याणक से पावन है।
वहीं निकट मंदारगिरी चम्पापुरि का पर्वत है।।9।।

वर्तमान में ये दोनों प्रभु वासुपूज्य के तीरथ।
भव्यात्माओं को दर्शन से प्रगटाते मुक्तीपथ।।

इसीलिए चम्पापुर तीरथ की जयमाल बनाई।
वासुपूज्य तीर्थंकर की पूजन में इसे चढ़ाई।।10।।

एक यही इच्छा है मेरी जन्मभूमि अर्चन में।
रत्नत्रय निधि को पाकर कर पाऊँ जन्म सफल मैं।।
बस तब तक ''चंदनामती'', पूजन का भाव रहेगा।
पूज्य न जब तक बन जाऊँ, प्रभु नाम हृदय में रहेगा।।11।।

मेरा यह पूर्णार्घ्य समर्पण, चम्पापुर तीरथ को।
है पवित्र जिस भू का कण कण, नमन है उसकी रज को।।
दुःखों का क्षय हो प्रभु! मेरे, कर्मों का भी क्षय हो।
मरण समाधीयुत हो जिससे, मेरा सुख अक्षय हो।।12।।

-दोहा-

तीर्थंकर अरु तीर्थ का, प्रस्तुत यह गुणगान।
अर्घ्य चढ़ाकर मैं चहूँ, स्वातम में विश्राम।।13।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरीतीर्थक्षेत्राय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छन्द

जो भव्य प्राणी जिनवरों की, जन्मभूमि को नमें।
तीर्थंकरों की चरणरज से, शीश उन पावन बनें।।
कर पुण्य का अर्जन कभी तो, जन्म ऐसा पाएंगे।
तीर्थंकरों की श्रृँखला में, ''चंदना'' वे आएंगे।।1।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।।

भगवान श्री वासुपूज्य की आरती

रचयित्री–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–ॐ जय.....

ॐ जय वासुपूज्य स्वामी, प्रभु जय वासुपूज्य स्वामी।
पंचकल्याणक अधिपति-2, तुम अन्तर्यामी।।ॐ जय.।।

चंपापुर नगरी भी, धन्य हुई तुमसे।स्वामी धन्य.....
जयरामा वसुपूज्य तुम्हारे, मात पिता हरषे।।ॐ जय.।।1।।

बालब्रह्मचारी बन, महाव्रत को धारा। स्वामी महाव्रत.....
प्रथम बालयति जग ने, तुमको स्वीकारा।।ॐ जय.।।2।।

गर्भ जन्म तप एवं, केवलज्ञान लिया। स्वामी.....
चम्पापुर में तुमने, पद निर्वाण लिया।।ॐ जय.।।3।।

वासवगण से पूजित, वासुपूज्य जिनवर। स्वामी.....
बारहवें तीर्थंकर, है तुम नाम अमर।।ॐ जय.।।4।।

जो कोई तुमको सुमिरे, सुख सम्पति पावे।स्वामी.....
पूजन वंदन करके, वंदित हो जावे।।ॐ जय.।।5।।

घृत आरति ले हम सब, तुम आरति करते।स्वामी.....
उसका फल यह मिले चंदना-मती शुद्ध कर दे।।ॐ जय.।।6।।

चम्पापुर तीर्थ की आरती

रचयित्री–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–चांद मेरे आ जा रे .....

तीर्थ की आरति करते हैं-2
वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर को जजते हैं।।टेक.।।

प्राचीन संस्कृति की ये, दिग्दर्शक मानी जाती ।
हुआ धर्मतीर्थ का वर्तन, शास्त्रों में गाथा आती ।।
धरा वह पावन नमते हैं-2
वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर को जजते हैं।।1।।

वसुपूज्य वहां के राजा, उनकी थीं जयावती रानी।
उनकी पावन कुक्षी से, जन्मे थे अन्तर्यामी ।।
जन्म की वह तिथि भजते हैं-2
वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर को जजते हैं।।2।।

बचपन से यौवन काया, प्रभु वासुपूज्य ने पाया।
पर नहीं फंसे विषयों में, अरु बालयती पद पाया।।
दीक्षा की वह तिथि नमते हैं-2
वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर को जजते हैं।।3।।

चम्पापुर के ही निकट में, मंदारगिरी पर्वत है।
दीक्षा व ज्ञान से पावन, निर्वाणक्षेत्र भी वह है।।
सिद्धभूमी को भजते हैं-2
वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर को जजते हैं।।4।।

हैं वर्तमान में दोनों प्रभु वासुपूज्य के तीरथ।
हर भव्यात्मा को दर्शन, से प्रकटाते मुक्तीपथ।।
मुक्ति हेतू हम यजते हैं-2
वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर को जजते हैं।।5।।

मन्दिर की मूल वेदी में, माणिकवर्णी प्रतिमा है।
लगे तीर्थ बड़ा ही प्यारा, अद्भुत इसकी गरिमा है।।
वहां का हर कण नमते हैं-2
वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर को जजते हैं।।6।।

निज आत्मशांति के हेतू, इस तीर्थ की आरति कर लो।
पाना हो पंच परम पद, ''चंदनामती'' प्रभु भज लो।।
मोक्ष की आशा करते हैं-2
वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर को जजते हैं।।7।।

णमोकार महामंत्र की महिमा

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज-अरे जग जा रे चेतन.....

अरे देखो रे! महिमा मंत्र की,
णमोकार की महिमा निराली है।।अरे...।।टेक.।।

एक कहानी सुन लो भाई, जैन रामायण में है आई।
अरे पशु भी बन गया देव रे,
णमोकार की महिमा निराली है।।1।।

नगर महापुर में इक श्रेष्ठी, धर्म में उनकी बहुत रुची थी।
वे पद्मरुचि चले घूमने,
णमोकार की महिमा निराली है।।2।।

बूढ़ा बैल दिखा इक उनको, मरणासन्न देखकर उसको।
अरे मंत्र सुनाया कान में,
णमोकार की महिमा निराली है।।3।।

बैल ने मंत्र सुना शान्ती से, निकले प्राण तभी उस तन से।
उसी नगरी में बना युवराज वह,
णमोकार की महिमा निराली है।।4।।

राजा छत्रच्छाय की रानी, उनके पुत्र की सुनो कहानी।
हुए वृषभध्वज युवराज वे,
णमोकार की महिमा निराली है।।5।।

एक बार युवराज नगर में, घूम रहे थे उसी जगह पे।
हुआ पूर्वजनम का ज्ञान रे,
णमोकार की महिमा निराली है।।6।।

जान लिया मैं बैल था पहले, वहाँ बहुत दुःख पाये मैंने।
महामंत्र सुना था अंत में,
णमोकार की महिमा निराली है।।7।।

सोचा उसने कैसे खोजूँ, बदला उपकारी का चुका दूँ।
मिला जिससे नरभव आज रे,
णमोकार की महिमा निराली है।।8।।

उसने वहीं मंदिर बनवाया, सोच के उसमें चित्र बनाया।
उस चित्र में बैल व सेठ थे,
णमोकार की महिमा निराली है।।9।।

कोतवाल इक वहाँ बिठाया, उसको चित्र का सार बताया।
कोई ध्यान से देखे तो बुलवाना,
णमोकार की महिमा निराली है।।10।।

इक दिन पद्मरुची वहाँ आये, चित्र देख मन में हरषाये।
इसे किसने बनाया बोल पड़े,
णमोकार की महिमा निराली है।।11।।

बैल को मंत्र सुनाया था मैंने, किन्तु हमें देखा न किसी ने।
फिर कैसे बना यह चित्र है,
णमोकार की महिमा निराली है।।12।।

कोतवाल सब देख रहा है, सेठ के भाव को समझ रहा है।
गया बतलाने फिर महल में,
णमोकार की महिमा निराली है।।13।।

राजकुमार तुरत ही आये, उपकारी से मिल हरषाये।
उनके पद किया प्रणाम रे,
णमोकार की महिमा निराली है।।14।।

बैल का जीव ही मैं हूँ भाई, आपने ही नरगति दिलवाई।
उपकार करूँ क्या आपका,
णमोकार की महिमा निराली है।।15।।

दोनों मित्र बने आपस में, श्रावक व्रत धारण किया मन में।
तब बैल बना सुग्रीव रे,
णमोकार की महिमा निराली है।।16।।

पद्मरुची फिर राम बन गये, मित्र से उनके काम बन गये।
फिर मुक्त हुए संसार से,
णमोकार की महिमा निराली है।।17।।

कहे 'चन्दनामति' तुम सबसे, कथा पढ़ो यह रामायण से।
भव दुख से हो उद्धार रे,
णमोकार की महिमा निराली है।।18।।